पाठों का परिचय

जिन्हें यह सीखने की आवश्यकता है कि उद्धार पाने के लिए ज़्या करें, उनके साथ अध्ययन आरज़्भ करने के लिए इस *गाइड (मार्गदर्शक)* में दिए गए आठ पाठ महत्वपूर्ण हैं। ये पाठ युज़्तिसंगत ढंग से एक के बाद एक क्रमबद्ध दिए गए हैं और इस पुस्तक में दिए गए क्रम के अनुसार उनका इस्तेमाल लाभदायक ढंग से किया जा सकता है। परन्तु शिक्षक को इस बात का अहसास होना ज़रूरी है कि सीखने वाला पहले तीन पाठों को समझ गया है और उनमें विश्वास करता है और अब उसे पाठ 4, अर्थात ''उद्धार'' पर पाठ पढ़ाना चाहिए।

धार्मिक मामलों के संवेदनशील होने के कारण कभी-कभी अगले अध्ययनों के लिए एक आधार तैयार करने वाले पाठों के साथ आरज़्भ करना आवश्यक होता है। हो सकता है कि सीखने वाले को आरज़्भिक पाठों से समझ न आए, कि उद्धार पाने के लिए उसे ज़्या करना है, परन्तु इनसे शिक्षार्थी को बाइबल का वह ढंग बताने में सहायता मिल सकती है जो सच्चाई को सिखाने के लिए बाद में उपयोगी होगा वरना आधारभूत सच्चाइयों की समझ न होने पर बाद में वह उनसे असहमत हो सकता है।

सिखाने वाले को चाहिए कि किसी भी पाठ के अध्ययन से पहले, सब पाठों को समझ ले ताकि उसे पता चल जाए कि उसे उन पाठों को किस क्रम में प्रस्तुत करना है। इस *मार्गदर्शक* के आठ पाठ नीचे दिए गए विचारों को एक रेलगाड़ी की तरह आगे बढ़ाते हैं।

पाठ 1. ''पाप एवं मृत्यु कहां से आए?'' पाठ में बताया गया है कि अदन की वाटिका में ज़्या हुआ जिस कारण परमेश्वर को अपनी बनाई अच्छी सृष्टि को श्राप देना पड़ा था। सिखाने वाला इस पाठ में समझा सकता है कि, आदम और हव्वा द्वारा भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने के कारण पाप इस संसार में आया और उस वृक्ष का फल खाने से मनुष्यजाति पर भलाई और बुराई की मुश्किल आई। परन्तु नवजात शिशु जन्म से पापी नहीं होते अर्थात जन्म के समय उन्हें भले और बुरे का कोई ज्ञान नहीं होता। इसका ज्ञान उन्हें बाद में प्राप्त होता है।

पाठ 2. ''परमेश्वर की योजना ज़्या है?'' पाठ में इब्राहीम को एक बड़ी जाति और उसके वंश के द्वारा पृथ्वी की सब जातियों को आशीष देने की परमेश्वर की योजना बताई गई है। शिक्षक यह समझा सकता है कि परमेश्वर ने कभी भी संसार को व्यवस्था के द्वारा आशीष देने की योजना नहीं बनाई (जो आशीष के बजाय श्राप ही लाई) थी, बल्कि उसने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि से भी बहुत पहले हमारे पापों के लिए अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा मनुष्य जाति को आशीष देने की योजना बनाई थी। व्यवस्था का उद्देश्य मनुष्य को यीशु

के पास लाना था, परन्तु अब जबकि यीशु मसीह का विश्वास आ चुका है, तो हम व्यवस्था के अधीन नहीं हैं बल्कि यीशु मसीह की नई वाचा के अधीन हैं।

पाठ 3. ''ज़्या यीशु मनुष्य के लिए नया ढंग है ?'' में दिखाया गया है कि मनुष्य जाति के लिए उद्धार का *ढंग* पशुओं के बलिदानों वाली व्यवस्था *नहीं,* बल्कि यीशु है जिसका प्रचार यरूशलेम से आरज़्भ करके संसार के सब भागों में हुआ। शिक्षक दिखा सकता है कि किस प्रकार परमेश्वर ने क्रूस पर यीशु की मृत्यु की परछाई होने के लिए पशुओं के बलिदानों की योजना बनाई थी। उसकी मृत्यु के बाद, यरूशलेम से आरज़्भ करके सारे संसार में उस नये ढंग का प्रचार किया जा सकता था। क्षमा के ढंग के रूप में जो कुछ यरूशलेम में प्रचार किया गया था हर युग में प्रत्येक जाति को वही करने की आवश्यकता है।

पाठ 4. ''ज़्या आपका उद्धार हुआ है ?'' पाठ में दिखाया गया है कि यीशु के लहू से उपलज़्ध कराई गई पापों की क्षमा को पाने के लिए ज़्या करने की आवश्यकता है। शिक्षक दिखा सकता है कि जिन्हें यीशु के बारे में सिखाया गया है, उन्हें यीशु में विश्वास करके यीशु के लिए जीने का संकल्प करके यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार और बपतिस्मे में यीशु के साथ गाड़े जाकर अपने पापों से उद्धार मिलता है। यीशु के लहू द्वारा यह क्षमा उन लोगों के लिए है जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया है। वे सब जो मसीह में हैं, उसकी एक देह अर्थात मसीह की कलीसिया में हैं।

पाठ 5. ''मसीह की कलीसिया के बारे में बाइबल ज़्या बताती है ?'' पाठ में मसीह की कलीसिया को सब मसीहियों से बनी मण्डली के रूप में दिखाया गया है। यीशु विश्वासियों की इस मण्डली को बनाने वाला, आधार, सिर और उद्धारकर्ज़ा है। उन पर सिर होने के कारण, वह चाहता है कि उसकी देह संगठित हो जो मिल जुलकर रहती हो और उसमें फूट न हो। उनसे अपने प्रेम के कारण, वह उनके लिए मर गया था ताकि वह उन्हें अपने लिए किसी दाग-धज़्बे या किसी ऐसी वस्तु के बिना अर्थात पवित्र और निर्दोष ठहराए।

पाठ 6. ''मसीह की कलीसिया कैसे संगठित थी ?'' पाठ में दिखाया गया है कि कलीसिया के कभी न बदलने वाले संगठन में, उसका सिर यीशु है, और नींव बारह प्रेरित व नये नियम के भविष्यवज़्ता हैं। ऐल्डर्स [ऐल्डर का बहुवचन रूप] (प्राचीन जिन्हें बिशप्स [बिशप का बहुवचन रूप]और पास्टर्स [पास्टर का बहुवचन रूप] भी कहा जाता है), सेवक (डीकन्स [डीकन का बहुवचन रूप]), सुसमाचार सुनाने वाले (या इवेंजलिस्ट), उपेदशक (सिखाने वाले) तथा सदस्य स्थानीय मण्डलियों में सेवा करते हैं। इन सब के अलग-अलग कार्य तथा योग्यताएं हैं।

पाठ 7. ''ज़्या आप परमेश्वर की स्वीकार्य आराधना करते हैं ?'' पाठ में उन बातों का उल्लेख किया गया है जो परमेश्वर आराधना में हमसे इच्छा करता है। शिक्षक समझा सकता है कि कलीसिया को उसी प्रकार आराधना की तलाश में रहना चाहिए जो परमेश्वर को स्वीकार्य है अर्थात उन्हें आत्मा और सच्चाई से आराधना करनी चाहिए। उसने हम से कहा है कि जो कुछ करने के निर्देश उसने हमें दिए हैं उनमें हम न तो कुछ जोड़ें और न ही कुछ निकालें।

पाठ 8. ''आपका अनन्त भविष्य ज़्या होगा?'' पाठ में इस सच्चाई को दिखाया गया है कि केवल दो ही श्रेणियों के लोग हैं अर्थात क्षमा पाए हुए पापी और वे पापी जिनकी क्षमा नहीं हुई। सब मनुष्य पापी हैं ज़्योंकि सब ने परमेश्वर के मापदण्डों का उल्लंघन किया है। वे पापी जिनके पाप क्षमा नहीं हुए, उनका भविष्य बहुत ही कष्टदायक अर्थात अनन्तदण्ड वाला होगा, जबकि क्षमा पाए हुए पापी का भविष्य स्वर्ग में परमेश्वर के साथ हमेशा का आनन्द होगा। क्षमा पा चुके लोगों ने परमेश्वर की बात मान ली, और जिनकी क्षमा नहीं हुई वे, वे लोग हैं जिन्होंने उसकी बात नहीं मानी। इन्सान का अनन्त निवास इस बात पर निर्भर करता है कि वह परमेश्वर की इच्छा को कैसे मानता है।

विचार

इन आठ पाठों को अच्छी तरह समझकर प्रस्तुत करने पर एक छात्र को यह अहसास हो जाना चाहिए कि उसका उद्धार यीशु पर निर्भर है और यह भी कि उसका जीवन उस में विश्वास से और उसकी इच्छा को पूरा करते हुए बीतना चाहिए। इन पाठों को प्रस्तुत करते हुए यीशु के अधिकार, परमेश्वर के अनुग्रह, परमेश्वर के प्रेम, परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु को सज़्मान देने की आवश्यकता, और यीशु से अपने निजी सज़्बन्ध की आवश्यकता पर ज़ोर न देने वाले संदेश से शिक्षक का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाएगा।

जब शिक्षक इस *मार्गदर्शक* में अध्ययन के आठ पाठों से अच्छी तरह से परिचित हो जाए, तो उसे प्रस्तुत किए जाने वाले पाठ पर ध्यान लगाना चाहिए। उसे पाठ को अच्छी तरह पढ़कर उस पाठ में पाई जाने वाली सब बातों से अच्छी तरह परिचित हो जाना चाहिए। उसे चाहिए कि उन सभी आयतों को भी देखे और जान ले कि पाठ से कैसे सज़्बन्धित हैं। यह सब करने के बाद, वह पाठ के प्रत्येक पहलू को प्रस्तुत करने पर विचार करने के लिए तैयार है।

नीचे दी गई सामग्री शिक्षक को प्रत्येक पाठ की तैयारी तथा प्रस्तुति में सहायता के लिए है। आवश्यक नहीं कि शिक्षक इसका इस्तेमाल *टीचर'ज़ गाइड* (शिक्षक का मार्गदर्शक) में दिए गए सुझावों के अनुसार ही करे, परन्तु उसे प्रत्येक पाठ को प्रस्तुत करने से पहले *शिक्षक का मार्गदर्शक* में दी गई बातों को समझने के लिए समय निकालना चाहिए।